ग्रंथ सूची

i. आधार ग्रंथ

क्रम	लेखक का नाम	पुस्तक का नाम	प्रकाशन
1	कोहली, नरेंद्र,	तोड़ो कारा तोड़ो खंड 1 निर्माण	किताबघर प्रकाशन 4855-56/24, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली, प्र 2002
2	कोहली, नरेंद्र,	तोड़ो कारा तोड़ो खंड 2 साधना	किताबघर प्रकाशन 4855-56/24, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली, प्र 2002
3	कोहली, नरेंद्र,	तोड़ो कारा तोड़ो खंड 3 परिव्राजक	किताबघर प्रकाशन 4855-56/24, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली, प्र 2018
4	कोहली, नरेंद्र,	तोड़ो कारा तोड़ो खंड 4 निर्देश	किताबघर प्रकाशन 4855-56/24, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली, प्र 2018
5	कोहली, नरेंद्र,	तोड़ो कारा तोड़ो खंड 5 संदेश	किताबघर प्रकाशन 4855-56/24, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली, प्र 2014
6	कोहली, नरेंद्र,	तोड़ो कारा तोड़ो खंड 6 प्रसार	किताबघर प्रकाशन 4855-56/24, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली, प्र 2015

ii. सहायक ग्रंथ

क्रम	लेखक का नाम	पुस्तक का नाम	प्रकाशन
1	तिवारी, रामचंद्र,	हिंदी का गद्य-साहित्य	विश्वविद्यालय प्रकाशन पोस्ट बॉक्स नम्बर 1149 विशालाक्षी भवन चतुर्थ तल चौक, वाराणसी 221001 उत्तर प्रदेश, भारत, प्रथम संस्करण 1955
2	नागर, अमृतलाल,	मानस का हंस	प्रकाशक, राजपाल एंड संज़, प्रकाशन 1590, मदरसा रोड, कश्मीरी गेट, दिल्ली-110002, संस्करण, 2018
3	नागर, अमृतलाल,	खंजन नयन	प्रकाशक राजपाल एंड संज़ 1590, मदरसा रोड, कश्मीरी गेट, दिल्ली-110006 संस्करण, सन 2013
4	रांगेय, राघव,	रत्ना की बात	प्रकाशक, राजपाल एंड संज़ 1590, मदरसा रोड, कश्मीरी गेट, दिल्ली-110006, संस्करण, 2015

5	मिश्र, कृष्णबिहारी,	कल्पतरु की उत्सव लीला	प्रकाशक, भारतीय ज्ञानपीठ, 18 इंस्टीटुशनल एरिया, लोधि रोड, नई दिल्ली - 110003, पंचम संस्करण, 2017
6	राय, गोपाल,	हिंदी उपन्यास का इतिहास	राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड 1-बी नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली-110002, प्रथम संस्करण, 2002
7	कोहली, नरेंद्र,	अभिज्ञान	प्रकाशक, राजपाल एंड संज़, 1590मदरासा रोड, कश्मीरी गेट, दिल्ली-110006, संस्करण 2016
8	कोहली, नरेंद्र,	सैरंध्री	प्रकाशक, वाणी प्रकाशक, 4695, 21-ए, दरियागंज, नई दिल्ली, 110002, संस्करण, 2009
9	कोहली, नरेंद्र,	हिडिम्बा	प्रकाशक, वाणी प्रकाशन, 4695, 21-ए, दरियागंज, नई दिल्ली-110002, प्रथम

			संस्करण, 2012, आवृत्ति संस्करण, 2016
10	कोहली, नरेंद्र,	महासमर भाग 1 बंधन	प्रकाशक, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली-110006, प्रथम संस्करण, 2015
11	कोहली, नरेंद्र,	महासमर भाग 2 अधिकार	प्रकाशक, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली-110006, प्रथम संस्करण, 2015
12	कोहली, नरेंद्र,	महासमर 3 कर्म	प्रकाशक, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली-110006, प्रथम संस्करण, 2015
13	कोहली, नरेंद्र,	महासमर भाग 4 धर्म	प्रकाशक, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली-110006, प्रथम संस्करण, 2015
14	कोहली, नरेंद्र,	महासमर भाग 8 निर्बन्ध	प्रकाशक, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली-110006, प्रथम संस्करण, 2015
15	कोहली, नरेंद्र,	युद्ध भाग 1	प्रकाशक, वाणी प्रकाशन, 4695, 21-ए, दरियागंज, नई दिल्ली-110002,

			संस्करण, प्रथम संस्करण, 2005
16	कोहली, नरेंद्र,	युद्ध भाग 2	प्रकाशक, वाणी प्रकाशन, 4695, 21-ए, दरियागंज, नई दिल्ली-110002, संस्करण, प्रथम संस्करण, 2005
17	कोहली, नरेंद्र,	अभ्युदय भाग 1	डायमंड पॉकेट बुक्स (प्राइवेट लिमिटेड) X -30 इंडस्ट्रियल एरिया,फेज-II, नई दिल्ली, संस्करण, 2017
18	कोहली, नरेंद्र,	अभ्युदय भाग 2	प्रकाशक, डायमंड पाकेट बुक्स नई दिल्ली, संस्करण, 2008
19	कोहली, नरेंद्र,	शिखंडी	प्रकाशक, वाणी प्रकाशन 4695, 21-ए, दरियागंज, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण का प्रकाशन सन 2020
20	कोहली, नरेंद्र,	कुंती	वाणी प्रकाशन, 4695-21ए, दरियागंज, नई दिल्ली, संस्करण, 2012,

			2018, आवृत्ति संस्करण, 2020
21	कोहली, नरेंद्र,	अहल्या	प्रकाशक, हिंद पॉकेट बुक्स, पेंगुइन रेंडम हाउस इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, गुड़गाँव, हरियाणा, प्रथम संस्करण, 2019
22	कोहली, नरेंद्र,	पुनरारंभ	प्रकाशक, वाणी प्रकाशन 4695, 21-ए, दरियागंज, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, सन 1994
23	कोहली, नरेंद्र,	सागर-मंथन	प्रकाशक, वाणी प्रकाशन, 4695, 21-ए, दरियागंज, नई दिल्ली-110006, प्रथम संस्करण 2018
24	कोहली, नरेंद्र,	प्रीति-कथा	प्रकाशक हिंद पॉकेट बूकस प्राईवेट लिमिटेड, जे -40, जोर बाघ लेन, नई दिल्ली-110028, प्रथम संस्करण 2005

25	गंगोपाध्याय, मृणालकांति,	भारत में दर्शनशास्त्र	प्रकाशक, राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड,1बि, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली-110002, पहला संस्करण 1992
26	चट्टोपाध्याय, देवीप्रसाद,	भारतीय दर्शन : सरल परिचय	प्रकाशक, राजकमल प्रकाशन, प्राइवेट लिमिटेड 1बि, नेताजी मार्ग, नई दिल्ली-110006, संस्करण, 1965
27	राधाकृष्णन, सर्वपल्ली,	भारतीय दर्शन खंड 1	प्रकाशक राजपाल एंड संज़, 1590, मदरसा रोड, कश्मीरी गेट, दिल्ली-110002, संस्करण, 2017
28	नित्यमुक्तानंद, स्वामी,	स्वामी विवेकानंद की वाणी और रचना खंड 1	प्रकाशक स्वामी नित्यमुक्तानंद उद्बोधन कार्यालय 1 उद्बोधन लेन, कोलकाता-700003, प्रथम संस्करण 21/03/1964
29	नित्यमुक्तानंद, स्वामी,	स्वामी विवेकानंद की वाणी और रचना खंड 2	प्रकाशक स्वामी नित्यमुक्तानंद उद्बोधन कार्यालय 1 उद्बोधन लेन,

			कोलकाता-700003, प्रथम संस्करण 21/03/1964
30	नित्यमुक्तानंद, स्वामी,	स्वामी विवेकानंद की वाणी और रचना, खंड 3	प्रकाशक स्वामी नित्यमुक्तानंद उद्बोधन कार्यालय 1 उद्बोधन लेन, कोलकाता-700003, प्रथम संस्करण 21/03/1964
31	विवेकानंद, स्वामी,	Thoughts To Inspire	Publisher, India book distributers Bombay Limited Corporate & Editorial Office 1007-1008, Archadia, 195, Nariman point Mumbai-400021, India Book Distributors Bombay Limited 2017
32	विवेकानंद, स्वामी,	कर्मयोग	प्रभात पेपरबैक्स, आसफ़ अली रोड, नई दिल्ली-110002, संस्करण, 2018
33	कोहली, नरेंद्र,	न भूतो न भविष्यति	प्रकाशक, वाणी प्रकाशन, 4695, 21-ए, दरियागंज,

			नई दिल्ली-110006, 2013
34	मिश्र, कृष्णबिहारी,	अराजक उल्लास	प्रकाशन भारतीय ज्ञानपीठ 18, इंस्टिटूशनल एरिया, लोदी रोड, नई दिल्ली-110003, संस्करण 2007
35	Raghuramaraju, A,	Debating Swami Vivekananda A Reader	Published by Oxford University Press 22 Work, 2nd Floor, Asaf Ali Road, New Delhi-110002, India, First Edition published in 2014
36	द्विवेदी, हजारी प्रसाद,	अशोक के फूल	प्रकाशक, लोकभारती प्रकाशन, पहली मंजिल, दरबारी बिल्डिंग, महात्मा गाँधी मार्ग, प्रयागराज-211001, पाँचवाँ पेपरबैक संस्करण, सन 2019
37	सिंह, बच्चन,	आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास	प्रकाशक,लोकभारती प्रकाशन पहली मंजिल,दरबारी बिल्डिंग,

			महात्मा गाँधी मार्ग, इलाहाबाद -211001, संस्करण, 2013
38	राघव, रांगेय,	लोई का ताना	प्रकाशक, राजपाल एंड संज़ प्रकाशन 1590, मदरसा रोड, कश्मीरी गेट, दिल्ली-110006, संस्करण 2007
39	राघव, रांगेय,	यशोधरा जीत गई	प्रकाशक, राजपाल एंड संज़, 1590, मदरासा रोड, कश्मीरी गेट, दिल्ली – 110006, संस्करण 2018
40	राघव, रांगेय,	मेरी भव बाधा हरो	प्रकाशक राजपाल एंड संज़ मदरसा रोड, कश्मीरी गेट प्रकाशन, दिल्ली-110006, संस्करण 2016
41	राघव, रांगेय,	लखिमा की आँखें	प्रकाशक राजपाल एंड संज़ मदरसा रोड, कश्मीरी गेट प्रकाशन, दिल्ली-110006, संस्करण 2016
42	किशोर, गिरिराज,	पहला गिरमिटिया	प्रकाशक राजपाल एंड संज़ मदरसा रोड, कश्मीरी गेट

			प्रकाशन, दिल्ली-110006, संस्करण 2011
43	गंभीरानंद, स्वामी,	युगनायक विवेकानंद	प्रकाशक, स्वामी नित्यमुक्तानंद, उद्बोधन कार्यालय, 1, उद्बोधन लेन, कोलकाता- 700003, प्रथम संस्करण, नवम्बर 1966
44	रायचौधरी, तपन,	योरोप पुनः दर्शन	प्रकाशक आनंद पब्लिशर्स, कोलकाता-700009, प्रथम संस्करण 1994 मूल पुस्तक अंग्रेज़ी में, शीर्षक Europe Reconsidered Perseption Of The West 19th Century Bengal
45	बसु, शंकरी प्रसाद,	विवेकानंद और समकालीन भारतवर्ष	प्रकाशक, डोला सेनापति 18/1 महात्मा गाँधी रोड, कोलकाता-700009, पहला संस्करण, सितम्बर, 1975

46	भटनागर, सुनीता,	स्वामी विवेकानंद का समाज-दर्शन	प्रकाशक, प्रतिभा प्रकाशन, 7259/23, अजेंद्र मार्किट, प्रेमनगर, दिल्ली-11007 संस्करण, 2013
47	कोहली, नरेंद्र,	क्षमा करना जीजी	प्रकाशक, भारतीय ज्ञानपीठ, 18, इन्स्टिटूशनल एरिया, लोदी रोड नई दिल्ली – 110003, संस्करण, 2011

iii. पत्र-पत्रिकाएँ

क्रम	लेखक का नाम	पुस्तक का नाम	प्रकाशन
1	अवधूत नित्यसत्यानंद	प्रगति शिखा	द्वितीय संस्करण, जनवरी-मार्च 2014, आनंदमार्ग प्रकाशन विभाग, 527, भि०आइ०पि० नगर, कोलकाता
2	Medhananda, Swami,	Was Swami Vivekananda a Hindu Supermacist ?	Religions 2020, 11, 368, www.mdpi.com/journal/religions

iv. वेब्सायट :

a. https://www.youtube.com/watch ?v=OmulNcwfEtw&t=876s

(Aaj Savere - An interview with Narendra Kohli, Eminent Author, by Doordardhan National)

b. https://www.youtube.com/watch ?v=3GCcaC-CSlo&t=1528s

(Sri Narendra Kohli's Speech at Shri Ramkrishna Ashrama, Rajkot)

नरेंद्र कोहली जी का मेरे द्वारा लिया गया साक्षात्कार

रविवार, 15 नवम्बर, 2020

प्रश्न 1: भारतवर्ष में कई महापुरुषों के होते हुए भी स्वामी विवेकानंद को ही आधार बनाकर आपने उपन्यासों की रचना की। इसकी वजह क्या है ?

उत्तर :

वजह यह है कि स्वामी विवेकानंद को मैंने पढ़ा और मुझे बहुत प्रिय लगे। उन्होंने मुझे इतना मत दिया कि मुझे लगा कि मुझे लिखे बिना गुज़ारा नहीं है। तो मैं यह कहता हूँ कि मैंने स्वामी विवेकानंद को नहीं चुना, स्वामी विवेकानंद ने मुझे चुना। अगर किसी को भी चुना जय आप यह प्रश्न पूछ सकते है, अब जीवन में किसी को... जैसे मैंने कहा कि उन्होंने मुझे चुना। क्योंकि मैंने सबको नहीं पढ़ा। मैंने जिसको पढ़ा, वो मुझे प्रिय लगा मैंने लिखा।

प्रश्न 2 : एक लम्बे समय तक आपने हिन्दू पौराणिक विषयों को आधार बनाकर उपन्यास लिखा है, हम देखते हैं कि 2017 में आप वरुणपुत्री लिखते हैं, 2018 में सागर-मंथन नामक उपन्यास लिखते हैं, फिर आप दोबारा पौराणिक आख्यानों के तरफ मुड़ जाते हैं जैसे अहल्या, शिखंडी आपका उपन्यास है। इसका क्या कारण है ?

उत्तर :

अहल्या राम कथा में से है और राम कथा 1975 से 1979 में लिखी गई। और बाक़ी शिखंडी इत्यादि जो उपन्यास हैं वो महासमर जो मेरा उपन्यास है उसमें से प्रकाशक ने वो सारे छोटे उपन्यास पाठकों के लिए निकले हैं देखिये सागर-मंथन का शीर्षक ही केवल पौराणिक है, कथा आधुनिकता को ही दर्शायी गई है।

प्रश्न 3 : मैंने जब सागर-मंथन पढ़ा तो मुझे एहसास हुआ कि इसमें आधुनिकता ही दर्शाई गयी है, तो अचानक आप आधुनिकता की और क्यों मुड़ जाते हैं ?

उत्तर :

देखिये, मैं मुड़ता नहीं हूँ, मैं सीधा चलता हूँ और हर नयी परिस्थिति से, जो मेरे सामने आये उसको लिखने से घबराता नहीं हूँ, कोई नीति नहीं है कि अभी ये करना है, कोई योजना नहीं होती है, यहाँ, मुझे कहा गया मेरे विषय में कहा गया कि मैं प्रयोगशील हूँ, प्रयोगशील हूँ तो उसमें अगर व्यंग्य लिखना है तो व्यंग्य लिख दूँगा, काव्य लिखना है तो काव्य लिख दूंगा, जैसे आपका ये जो है तोड़ो कारा तोड़ो ये तो ऐतिहासिक है, चरित्र पुराण पुरुष के समान है, पर कथा तो ऐतिहासिक है, लेकिन पौराणिक काल नही है। अभी तो डेरसो साल भी नहीं हुई उसको !

प्रश्न 4 : विवेकानंद जी ये कहते हैं कि 'मेरी माया मर चुकी है' तो कहीं न कहीं आपको यह नहीं लगता कि उनको अपनी बहन के निधन के बाद उनके मन में शायद आम मनुष्य की जो प्रवृत्ति है वो जागृत हो जाती है क्योंकि कहीं न कहीं वे विचलित हो जाते हैं, तो यहाँ क्या आम मनुष्य के रूप में विवेकानंद को दिखाया गया है ?

उत्तर :

(स्वामी विवेकानंद ने) ये जो कहा 'मेरी माया मर चुकी है' ये वस्तुतः उन्होंने कहा था। ये मेरे उपन्यास में ही नहीं है ये उनका कहा हुआ है और उसका अर्थ "मेरी माया" का अर्थ यह है कि व्यक्ति नरेन्द्रनाथ की अपनी मान अपमान की भावना है, अब ये जो बहन की मृत्यु है इससे उनको.. वो पीड़ित हैं कि स्त्री कोई इस तरह से आत्महत्या क्यों करती है जबकि वो उनकी बहन थी क्योंकि उनकी शिक्षा-दीक्षा नहीं हुई तो उस नारी शिक्षा के लिए वहीँ से वो मुड़े तो वो एक साधारण व्यक्तित्व के रूप में भी हो सकता है, एक सामाजिक नेता

के रूप में भी हो सकता है, एक आध्यात्मिक पुरुष के रूप में भी हो सकता है, माया उनकी जो है वो व्यक्तिगत मान-अपमान की बात है, जैसे अमेरिका में उन्हें कुली कहते हैं कि आओ गले मिलो, तो उन्हें पूछा जाता है कि "why don't you tell him that you are a black person, you are an Indian", तो उनका उत्तर है कि "इसलिए जन्म नहीं लिया है कि लोगों को निचा दिखाकर स्वयं को ऊँचा करूँगा...", ये उनकी व्यक्तिगत भाव की बात है लेकिन भारत, जब हिन्दू संस्कृति और धर्म के विरुद्ध में कहते हैं तो पादरी को कहते हैं उठा के समुद्र में फेंक दूँगा, हैं न ! तो 'माया' मरने का जो अर्थ है वो वही है कि व्यक्तिगत अपना अहंकार जो है वो मान अपमान मनुष्य का नहीं था व्यक्तित्व का था।

प्रश्न 5 : जैसे आज हम 2020 में बैठे हैं 2021 आने वाली है, आज के दृष्टिकोण से "तोड़ो कारा तोड़ो" उपन्यास की प्रासंगिकता को अगर हम देखें तो कैसे देख सकते हैं ?

उत्तर :

विवेकानंद जब अमेरिका गए थे, तो यह कहकर गए थे कि अपनी माता, भारत-माता का मुख उज्जवल करने जा रहा हूँ, देश के गौरव को ऊँचा करने के लिए वो गए और जो कुछ उन्होंने किया उससे देश का गौरव बढ़ा, तो आज हम क्या कर रहें हैं, वही तो कर रहें हैं।

प्रश्न 6 : जिस प्रकार आपने स्वामी विवेकानंद जी को आधार बनाकर उपन्यासों की रचना की है क्या उसी प्रकार अन्य कोई महापुरषों की जीवनकथा पर कोई रचना की मंशा है?

उत्तर :

इस समय मेरी जो वयष जो है... मैं अस्सी वर्ष का हो चूका हूँ अब मेरे पास बहुत समय तो है नहीं की मैं सोचूंगा और श्रृंखलाएं लिखूँगा और जैसा की मैंने कहा की मैंने तो योजना

बनाकर के नहीं किया था जो जो..., जैसे राम-कथा ने अगर मुझे बाँध लिया तो मैंने राम-कथा लिखी, महा-समर महाभारत पढ़ा तो उसके बाद लिखा, अब इधर विवेकानंद के बाद जो मैंने जो शरणम लिखा है वो भगवत गीता पर है, तो और किस पुरुष को ले, पुरुष की कमी है ? आदि शंकराचार्य भी हैं, गुरु गोबिंद सिंह भी हैं, नेताजी सुभाष चंद्र बोस भी हैं, बहुत सारे लोग हैं लेकिन अब मुझे यह दिखाई देता है कि अब मेरे पास न वो समय है न ऊर्जा है न उस तरह का जाग्रता है कि मैं कोई योजना बनाऊं, बन गया ! ये तो राम जी की इच्छा पर है, वो अनायास होता है, और लेखक के हाथ में नहीं होता है, चाहे वो जो मरज़ी करता रहे, स्वतः-प्रोत, सूत लेखक को बाँध लेता है वो लेखक लिखता है। इसलिए योजना ओजना तो कुछ नहीं है भैय्या मेरी कुछ लिखा गया तो लिखा गया।

प्रश्न 7 : आपने लगभग गद्य की सभी विधाओं में आपने अपना लेखन किया है, आपकी कुछ कहानियाँ भी मैंने पढ़ी है और आप उपन्यास भी आप लिखते हैं लेकिन काव्य विधा जो है हमारे साहित्य की एक बहुत ही खूबसूरत विधा है उस विधा में आप ने अपना लेखन क्यों नहीं किया?

उत्तर :

क्योंकि मैं कवि नहीं हूँ। मुझमें कवित्व नहीं है देखिए जब आप लिखते हैं तो आपको विषय वस्तु क्या है वो किस विधा में लिखी जा सकती है ये तो जानना है, लेकिन ये भी जानना है कि आपका अपना व्यक्तित्व जो है, वो किन गुणों से बना हुआ है। मुझमें कवित्व नहीं है कविता के लिए जो कुछ चाहिए वो मुझमे नहीं है। मैं गद्यकार हूँ, और (प्रबल) आदमी हूँ, व्यापक हूँ, इसलिए मैंने वो (पद्य) नहीं लिखा, गद्य में सब-कुछ लिखा।

प्रश्न 8 : जो 'शिखंडी ' उपन्यास है 2020 में वाणी प्रकाशन से ही प्रकाशित है, उसमें आपने शिखंडी को एक स्त्री के रूप में क्यों दर्शाया है जबकि आम महाभारत में जब हम देखते हैं तो वहां (उसे) एक किन्नर के रूप में दर्शाया गया है, लेकिन आप के उपन्यास में वह एक स्त्री के रूप में आती हैं, इसके पीछे की वजह क्या थी?

उत्तर :

आपने यह कैसे मान लिया कि महाभारत में वह किन्नर है ? मैंने तो महाभारत में उसे स्त्री के रूप में पाया। शिखंडी एक स्त्री थीं और उसको ऑपरेशन के बाद वो जो यक्ष उसको पुरुष बनाता है, मुझे तो कहीं किन्नर दिखाई नहीं दिया, आपको किस आधार पर लगा मुझे नहीं मालूम है, आप थोड़ा बताएँगे मुझे तो.. देखूंगा।

प्रश्न 9 : इस समय में आपका किस विषय में लिखने का विचार है?

उत्तर :

इस समय Covid का प्रकोप है, घर में बैठा हूँ, कहीं आना-जाना नहीं है, एक तरह से मन बन्दी है इस चीज़ का, तो मुझे लगता है कि अगर इस साये परिवेश पर कुछ बन गया तो... ये मेरे अस्सी वर्ष के जीवन में, पहली बार इस तरह की स्थिति आई है कि चारों तरफ महाकाल है, आप नहीं जानते कि मृत्यु किस रूप में आपके पास आ रही है। 1947 में देश का विभाजन हुआ था, हम जब आये थे वहाँ से, पंजाब से तो उस समय ये था कि आप बाहर निकलेंगे तो कोई आपको छुरा मार देगा, कोई गोली मार देगा, कोई ईट-पथ्थर मार देगा, लेकिन शत्रु पक्ष दृश्यमान था, दिखाई देता था, इस समय जो मृत्यु (हो रही) है वो दिखाई नहीं देती है, लेकिन चारों और आपको एक तरह की आभास है कि मृत्यु है, अगर

में जाऊंगा तो कहीं भी मुझे कोरोना पकड़ सकती है, तो ये एक भयानक किस्म का एक सत्य है तो अगर इसका कुछ होगा तो कुछ करूँगा।

मैं उम्मीद करता हूँ कि आप लिखें।

प्रश्न 10 : पौराणिक विषयों को लेकर उपन्यास जो आप लिखें हैं इसका मूल कारण क्या है और कोई व्यक्ति है क्या जो आपके जीवन में प्रेरणा-स्रोत रहा हो ?

उत्तर :

नहीं। मेरी अपनी प्रवृत्ति वो है, मैं यह कहता हूँ, कि भगवान ने ऐसा चाहा है, कि जब मैं समाचार-पत्र पढ़ता हूँ तो मैं उसमें पौराणिक प्रसंग देखता हूँ, जैसे केवल किसी एक की बात नहीं कर रहा हूँ लेकिन, समाचार पत्र में जो चार पृष्ठ शुरू के हैं वो राक्षसों के हैं, देख लीजिए हत्या, बलात्कार, अपहरण वगैरह-वगैरह जो कुछ भी है। तो इसमें पुराण दिखाई देते हैं। आज जो आतंकवाद जो इस्लामिक आतंकवाद है या इस तरह की चीज़ें हैं उसमें राक्षस दिखाई देते हैं, तो मैं पुराणों में अख़बार पढ़ता हूँ, अख़बार में पुराण पढ़ता हूँ। ये मेरी प्रकृति है, इसिलिए किसी की प्रेरणा की ज़रूरत नहीं है इसके लिए। ये अपने आप प्रकृति ने, ईश्वर ने मेरे अंदर ये बनाया है।

प्रश्न 11 : महोदय, आप आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी से कुछ प्रभावित हैं क्या? मैं ऐसे ही पूछ रहा हूँ क्योंकि वो भी…

उत्तर :

हजारी जी से प्रभावित हूँ कि नहीं, ये तो आप जानिए, मुझे वो पसंद हैं बहुत, उनका प्रशंसक हूँ। जिस तरह से उपनिषद में से उपन्यास उन्होंने बनाया, वो और कोई नहीं कर पाया है। तो मुझे वो बहुत प्रिय हैं, और अमृतलाल नागर मुझे बहुत प्रिय हैं। बाकी भी बहुत

सारी लेखक हैं, ये जो चतुर सेन शास्त्री हैं, उनको पढ़ा मैंने ज़रूर है, उनके उपन्यास, लेकिन मैं उनको ये नहीं कहता की वे मुझे बहुत प्रिय हैं या उनका बहुत सम्मान करता हूँ, या मैं उनको बहुत पढ़ना चाहता हूँ, ऐसा नहीं है, लेकिन दो नाम जो है हजारीप्रसाद द्विवेदी और अमृतलाल नागर, ये मेरे मन को बहुत प्रिय हैं।

प्रश्न 12 : स्वामी जी पर उपन्यास आपने लिखा, उसमें समाधि की बात आती है, सर मैं यह जानना चाहता हूँ, आप समाधि से क्या समझते हैं?

उत्तर :

समाधि मैं केवल ये सूचना के धरातल पर जानता हूँ और सूचना के धरातल पर आपको बतला रहा हूँ इसका अनुभव मुझे नहीं है, कभी मैं समाधिस्थ नहीं हो सका लेकिन यह है कि जैसे एकाग्रता किसी भी कारण से जब एक सीमा के पार चली जाती है तो आप कहते हैं कि वो समाधिस्थ हैं, अब वो ध्यान के माध्यम से हो, लेखक के लिए साहित्यकार के लिए कहा गया, भारतीय काव्य शास्त्र कह रहें हैं कि ये जब आप मधुमती भूमिका की जो स्थिति है वो वही है जो योगी के लिए समाधि है, तो मैं इसको यही समझ पाता हूँ कि जो एकाग्रता जब घनीभूत होती है, किसी भी तरह से हो जाए तो आपको एक ऐसी स्थिति में ले आती है जहां आप अपने आप को भूल जाते हैं, और साधारणीकरण जिसको हम कहते हैं जब राम वन जाते हैं तो हम कहते हैं कि वो दशरथ का बेटा नहीं जा रहा, बेटा जा रहा है, हमारा तादात्म उसी से होता है, तो इस रूप में जो साधारणीकरण है, तादात्म है, मधुमती भूमिका है, ये साहित्य के क्षेत्र में आप इसको समाधी के अव्यव के रूप में देख सकते हैं, योग में समाधि दूसरी तरह की है लेकिन है वो एकाग्रता ही।

प्रश्न 13 : जैसे कि आप ने पौराणिक साहित्य को आधार बनाकर लिखा है, या आध्यातन्मिक साहित्य को आधार बनाकर लिखा है अगर इसके भविष्य की बात करते हैं तो क्या लगता है इसका भविष्य उज्ज्वल है, मैं जानना चाहता हूँ कि इसका भविष्य क्या है?

उत्तर :

ये तो कोई ज्योतिषी ही बताएगा भैय्या, हम तो यह जानते हैं कि अगर आज आप हज़ारों वर्षों के बाद आपको संस्कार चाहिए तो आप रामायण को पकड़ते हैं, महाभारत को पकड़ते हैं, उपनिषदों को पकड़ते हैं तो क्या कारण है कि ये चीजें आगे नहीं काम आएँगे हमारे ? क्यों नहीं आएँगे ?

प्रश्न 14 : हमारे समाज में आध्यात्मिक साहित्य जो है उसका दार्शनिक प्रभाव क्या है?

उत्तर :

ऐसा है, जो मैं देख पाया ये जो दार्शनिक है न वो सूत्र में अपनी बात कहते हैं, सुनते हैं, और समझते हैं। उपन्यासकार या साहित्यकार जो है वो सभी विस्तार से कहता है, ये जे एन यू में दर्शनशास्त्र के प्रोफेसर थे धीरेंद्र शर्मा, हमारे मित्र थे उनको पुस्तक दी थी 'दीक्षा' तो बोले कि यार जो बात चार पंक्तीयों में कही जा सकती है उसे तुमलोग 40 पन्नो में कहते हो, हमसे नहीं पढ़ा जाता ये, ये व्यक्तित्व का भेद है, देखिए इतनी तरह की प्रकृति है उनकी रुचियाँ अलग अलग है स्वभाव अलग अलग हैं तो उसमें एक दर्शन संक्षेप में हैं साहित्य विस्तार में है, साहित्य में रस है, जो दर्शन में नहीं है या रसात्मक नहीं है कहना चाहिए, साहित्य जो है ये रसात्मक है, जिसको हम ये कहते हैं कि जो कि आपको ये पता भी नहीं होता कि कौनसी बात आप के अंदर उतार दी, और आप उसको सुख पूर्वक ग्रहण करते हैं, ये शास्त्र जो होता है वो पिता और गुरु के रूप में होता है कान्तसम्मत नहीं होता, साहित्य कान्तसम्मत है। तो उस रूप में जो दर्शन के रूप में सीधा पढ़ता है वो दूसरे शास्त्र के रूप में पढ़ता है।

प्रश्न 15 : क्या आपके कहने का मतलब यह है कि साहित्य में दर्शन को व्यापक रूप में देखा जाता है?

उत्तर :

व्यापक नहीं कहा मैंने, मैंने विस्तार कहा, उसी बात को हम कथा के माध्यम से कहते हैं, जैसे मैंने हजारीप्रसाद द्विवेदी का कहा, कि अगर उन्होंने एक उपनिषद को ले के एक प्रेम कथा में बदल दिया, बात तो कही उपनिषद की लेकिन बताया जिस माध्यम से, चोला जो है वो भिन्न है। तो हर आदमी अपने स्वभाव के अनुसार उसको ग्रहण करेगा कहाँ से ग्रहण करना है उसको। एक मज़े की बात मैं कहता हूँ कि हमारे वेद और हमारे उपनिषद सबकूछ सारा दर्शन उसमें है लेकिन ज़्यादा लोकप्रिय क्या हुआ, रामायण-महाभारत, अंतर क्या है इसमें कथा है उपनिषद में कथा नहीं है और अगर कथा है जबकि गीता की कथा है अगर कथोपनिषद में वो इतना पढ़ाया जाता है बृहदरण्यक उसमें है जिसमें कथा नहीं है।

और एक चीज़ जो मुझे लगता है, रामायण महाभारत कि लोकप्रियता कि एक तो है वो लौकिक संस्कृत में लिखी गई है, और दूसरी बात यह है कि दूसरी भाषाओं में उसका अनुवाद किया गया है, मुझे लगता है इस दो कारणों से इसकी लोकप्रियता बढ़ी है तो लेखक कहते हैं कि *अनुवाद तो वेदों का भी हुआ है, अनुवाद तो उपनिषदों का भी हुआ है।*

प्रश्न 16 : हिंदू पौराणिक कहानीयों को लेकर जैसे आप उपन्यास का सृजन कर रहें हैं, इस तरह से जैसे ईसाई में भी पौराणिक कथा होगी, इस्लाम धर्म में भी उनकी अपनी पौराणिक कथाएँ तो इन्हें लेकर लिखने का कोई विचार है आपको?

उत्तर :

जब मेरे अपने घर में इतना कुछ है तो मैं प्रदेश क्यों जाऊँगा?

एक बात इसके अतिरिक्त व्याभारिक – मैंने राम कथा को जैसा चाहा लिखा, आपने जैसे कहा कि अगर शिखंडी किन्नर था और मैंने उसको स्त्री बनाया अगर ऐसा हुआ तो, मुझे

किसी ने पत्थर नहीं मारे, मुझे किसी ने गाली नहीं दी, हिंदुओं की जो सहनशीलता है और हिंदुओं की जो प्रवृत्ति है कि वो कथाओं को उस तरह से अपनी इच्छा अनुसार बदलते भी हैं और उसे स्वीकार भी करते हैं, अगर इस्लाम में मैंने कुछ ऐसा कर दिया तो दंगा हो जाएगा, देखिए एक कार्टून बनता है डेनमार्क में और दंगा होता है कोहलपूर में तो वो मेरे लिए कोई स्वस्थ चीज़ नहीं होगी वैसे ये तो अतिरिक्त मैं व्यभारिकता के बारे में कह रहा हूँ लेकिन सही बात तो वो है जो पहले मैंने कही मेरे अपने घर में इतना कुछ है।

प्रश्न 17 : आप की दृष्टि में आध्यात्मिकता क्या है?

उत्तर :

ये तो बड़ा जिसको हम कहते हैं सूक्ष्म प्रश्न है कि आध्यात्म क्या है वैसे उसके शब्द का अर्थ यह होता है कि आप आत्मा के विषय में जो जानना है वो आध्यात्म है और हम कहते हैं कि जीवन में इस सांसारिकता से जितना आप मुक्त हो जाएँ वो आध्यात्म है। जो विवेकानन्द ने कहा, कंचन और कामिनी छोर दी न ? उसके बाद और किसी बात पर ध्यान देने की ज़रूरत नही है, अगर इसमें कहीं दोष हो तो मुझे बताओ, और जब आप कंचन कामिनी को छोड़ देंगे यानी कि संसार को छोड़ देंगे तो आप जिसकी और बढ़ेंगे वो ब्रह्म ही होगा।

लेकिन उन्होंने ये भी तो कहा है कि जब आप संसार को नहीं जानेंगे तो ब्रह्म को नहीं जानेंगे, साथ ही साथ ब्रह्म को अगर नहीं जानेंगे तो संसार को भी नहीं जानेंगे – तो उन्होंने कहा,

इशावास्य उपनिषद में एक श्लोक है संस्कृत में है उसका अर्थ यह है कि जो आदमी अज्ञान में डूब गया वो अंधकार में डूब गया, और जो आदमी ज्ञान में डूब गया वो उससे गहरे अंधकार में डूब गया, अब ये बड़ी विचित्र बात है कि जब आप अज्ञान में गए हैं तो भी अंधकार में और ज्ञान में गए तो भी आप अंधकार में हैं तो इसके बाद भाष्य करने के बाद लोग इसी निष्कर्ष पर पहुँचे हैं ये दो चीज़ें जो है किसी एक के तरफ़ हो जाएँगे तो दूसरे चीज़ में आप मार खाएँगे इसलिए जो विरोधी तत्व सृष्टि में है उन दोनो को जानना

आवस्यक है केवल धरती को जानो आकाश को न जानो और केवल आकाश को जानो और धरती को न जानो तो उससे अच्छा ये है कि आप दोनो को जानिए।

प्रश्न 18 : क्या आपको लगता है कि आध्यात्मिकता के प्रति लोगों का जो रुझान है वो प्राचीन काल की तुलना में घट रहा है? इसका मूल कारण क्या है?

उत्तर :

कभी जो है भौतिकता बढ़ जाती है, कभी आध्यात्मिकता बढ़ जाती है, देखिए हमारे देश का जो इतिहास है कि चंद्रगुप्त मौर्य शायद पहला बड़ा सम्राट था उसके पहले जो हैं वैदिक युग के उनकी बात छोड़ रहा हूँ जो हमारा परिचित इतिहास है उसमें तो उसने इतना बड़ा साम्राज्य बना करके ग्रीक लोगों को हराया और बाकी जो कुछ भी है उसके बाद अंत में जाकर के वो कर्नाटक में जा करके जैन धर्म की दीक्षा लेता है और तपस्या में लग जाता है। उसके बाद मे आता है अशोक, बिंदुसार ने तो इतना कुछ नहीं किया, अशोक आया उसने कलिंग का युद्ध किया इतना बड़ा सबकूछ करके उसके बाद जाकर के बौद्ध धर्म (का दीक्षा) ले लिया। हर्षवर्धन पर आ जाइए, हर्षवर्धन ने जब युद्ध जीत लिए और उत्तरी भारत में जो अपना साम्राज्य था बना लिया उसके बाद जो है व्हेन सांग से दीक्षा ले कर के दान कर देता है, तो ये जो एक प्रवृत्ति है इनके कारण नुक़सान बहुत हुआ हमारा क्योंकि जब विदेशी आक्रमणकारी आए तो उनसे लड़ने वाला कोई नहीं था, आप अहिंसक हो गए थे, एक एक समय में बौध धर्म के मठ में जो 1 लाख भिक्षु है जो कोई काम नहीं करता सिवाय बुद्धम शरणम गच्छामी उनको खाना खिलाने के लिए तो कम से कम 10 लाख परिवार चाहिए जो उनके लिए भोजन उपलब्ध कराए, तो ये चीज़ जो आयी हमारे यहाँ, आध्यात्मिकता उस समय बड़ी उसके बाद हम गर्त में डूबे न ! 1200 वर्ष तक हम इसी दासता में बंधे रहे क्योंकि उसके पहले हम बहुत आध्यात्मिक हो गए थे। इसीलिए आपको संसार को भी जानना है। जो भगवत गीता में कृष्ण कहते हैं अर्जुन को - कि आत्म रक्षा भी धर्म है समाज रक्षा भी धर्म है, परिवार की रक्षा भी धर्म है और अगर तुम युद्ध नहीं करोगे, शस्त्र नहीं

उठाओगे तो धर्म पर अधर्म शासन करेगा और अधर्म शासन करेगा तो जो होगा आपको मालूम ही है। इसीलिए हम यह कहते हैं कि अहिंसा परमो धर्म, हिंसा धर्म च। (इसी बात पर एक बात मैं कह रहा हूँ कि नाथूराम गोडसे कह रहें हैं कि कहीं न कहीं हिंसा की भी मतलब आवश्यक है – उनका उत्तर था - *गांधी जी को ना मारा होता तो गांधी और बहुत अनर्थ करता भारत के लिए।* इसपर मेने कहा - गांधी के साथ मेरी कोई शत्रुता नहीं थी वो राष्ट्र पिता थे लेकिन अधिक अहिंसक हो चुके थे - उनका उत्तर था - *केवल अहिंसक नहीं हो चुके थे, वे मुसलमानो के परम हितु और हिंदुओं के परम शत्रु हो चुके थे। इसलिए उस समय जो कुछ वो कर रहे थे, विभाजन हुआ - लाखों हिंदू मरे हैं आपने किसी से सहानुभूति जताई ? यहाँ की मुसलमानों की रक्षा करते रहे आप और उधर तो पाकिस्तान के जो हिंदू आ रहे थे उनके विषय में कुछ ये नहीं था आपका, तो या तो विभाजन किया था तो जिसको transfer of population कहते हैं वो कर लेते मुसलमान वहाँ जाएँ हिंदू इधर आए या वहाँ के हिंदू वहाँ रहे लेकिन उनकी रक्षा का प्रबंध सरकार करेगी, यहाँ के मुसलमान यहाँ रहे आपने कुछ नहीं किया केवल मुसलमानों की रक्षा करते रहे, हिंदुओं को मरने के लिए छोर दिया। और ऐसे दूसरे उदाहरण मैं दे सकता हूँ, मैं क्या जिसने भी पढ़ा है वो बता सकता है, कि गाँधी ने कहाँ कहाँ क्या क्या किया।*

तब मेने कहा – काफ़ी लोगों को त्रासदी झेलनी पड़ी, हमारे पूर्वज 1947 में हमारे दादाजी यहाँ आए थे हिन्दुस्तान की आज़ादी के दो साल पहले मतलब लग रहा था की हम अपने वतन छोरकर नहीं जाएँगे आना पड़ा।

उनका उत्तर था - *2.5 करोड़ हिंदुओं का स्थापन हुआ, क्या किया गाँधी ने ? क्या किया नेहरु ने ? मुसलमानो की रक्षा करते रहे, केरल में मोकला लोगों ने नरसंहार किया हिंदुओं का, गाँधी ने कहा कि मोकला हमारे भाई हैं, इतना अहिंसक थे वो।*

प्रश्न 18 : नवीन भारत के निर्माण में जो आध्यात्मिकता है उसे आप कितना प्रासंगिक मानते हैं?

उत्तर :

वो तो हमारे संस्कृति का प्राण है, उसकी प्रासंगिकता-अप्रासंगिकता का प्रश्न नहीं है, उसके बिना हमारा अस्तित्व नहीं है, आध्यात्म तो रहेगा, कौन कितना आध्यात्मिक होगा ये अलग चीज़ है, लेकिन देश के, राष्ट्र के, जीवन में उसके इतिहास में हम रामायण महाभारत को उपनिषदों को गीता को छोर कर के थोड़े ही हमारा राष्ट्र है ? तो वो हमारे प्राण है, वो तो उसके बिना नहीं होगा, भारत जो है वो केवल एक भूमि नहीं है। अगर आपने कालिदास को नहीं पढ़ा, आपने वाल्मीकि को नहीं पढ़ा, या और जो (महापुरश) हैं, तो आपने भारत को नहीं जाना। और भारत को जानने के लिए ज़रूरी है कि आप उनको भी जानिए।

तभी तो विवेकानंद अपनी देश की भाषा को जानने की बात कहते हैं – *बिलकुल बिलकुल बिलकुल !*

प्रश्न 19 : हमारे आध्यात्मिक दर्शनों में ब्रह्मचर्य की बात की गई है, मैं ये जानना चाहता हूँ आध्यात्मिक उन्नति के लिए आपकी दृष्टि से ब्रह्मचर्य कितना आवश्यक है?

उत्तर :

जितना कर सको ! हमारे यहाँ देखें जो गुरु हैं, अधिकांक्ष गुरु गृहस्त हैं, लेकिन आध्यात्मिकता उनमे किसी से कम नहीं है, ठीक वेसे ही, हम राम की बात करें कृष्ण की बात करें वे गृहस्त लोग थे, लेकिन उसी समय ऋषि जो हैं वे ब्रह्मचर्य की बात करते हैं लेकिन उसी समय अगर उनकी भी पत्नी है, वशिष्ठ की भी पत्नी है, और जो बड़े बड़े ऋषि हैं उनकी भी पत्नियाँ हैं तो, गृहस्थ जीवन उन्होंने व्यतीत किया तो वहाँ परिभाषा यह दी गई कि ब्रह्मचर्य का मतलब अपनी पत्नी की प्रति निष्ठा, एक पत्नीव्रत, तो अगर आपकी निष्ठा एक पत्नी के प्रति है और इधर उधर नहीं, व्यभिचार नहीं कर रहें हैं तो ठीक है और अगर शुद्ध रूप से कंचन और कामिनी का त्याग कर सके, रामकृष्ण परमहंस और

विवेकानन्द की तरह, देखिए रामकृष्ण परमहंस के साथ तो उनकी पत्नी थीं लेकिन सम्पर्क नहीं था सम्बंध नहीं था।

एक तरह से मा का जो सम्बंध है वो था क्योंकि माँ काली और माँ शारदा में कोई भिन्नता उनको नज़र नही आती थी।

प्रश्न 20 : चरित्र को आप किस प्रकार परिभाषित करेंगे?

उत्तर :

चरित्र जो है उसमें कई तत्व है, जैसे ब्रह्मचर्य तुमने कहा, सत्य दूसरा है, एक आदमी झूठा हो तो वो चरित्रवान नहीं हो सकता, अगर ... सेक्स के सम्बंधों में भी उसको सत्यनिष्ट होना पड़ेगा, अपनी पत्नी के प्रति ही निष्ठावान है तो चरित्रमान है, मोह को भी छोड़ना होगा पैसे के मामले में अगर बेयिमानी नहीं करता है, दूसरे के पैसे नहीं खाता है, तो भी चरित्र का वो गुण मानते है हम उसको, तो सत्य और इसके आसपास के जितने काम, क्रोध, लोभ मोह वगैरा को छोर कर के जो चरित्र है, वो चरित्र है।

आपके कहने का मतलब है की निष्ठावान रहना – *हाँ सत्य के प्रति कहो देश के प्रति कहो समाज के प्रति कहो, मतलब ये है कि दूसरों को आप कष्ट नहीं देंगे पर कल्याण करेंगे, कल्याण का काम जो है वो सब चरित्र (ही है) ये सदगुण है चरित्र के, उनके आधार पर ही हम चरित्र को नापते हैं, अगर आप अपने स्वार्थ में दूसरों का अहित करते हैं तो आप चरित्रवान नहीं कहलाएँगे।*

प्रश्न 21 : स्वामी विवेकानन्द का जो अध्यात्म दर्शन है और समाज दर्शन है, इसके विषय में स्वामी जी की किस प्रकार की अवधारणा थी?

उत्तर :

देखो आध्यात्म तो उनका सीधा सीधा अद्वेत है, अद्वैत है और अद्वैत में ये है कि जो हिंदू दर्शन है, जो उन्होंने शिकागो में कहा था अपने परिचय में कि वो महिन्य स्रोत का जो यह

श्लोक है, जिसमें कहा जाता है कि जैसे पानी, जल पहाड़ों से, चट्टानों से उससे होता हुआ उलटा सीधा बहता हुआ अंत में जा करके समुद्र में मिलता है, उसी तरह से प्रभु कोई कहीं भी किसी भी आपका उपासना करे वो आपको ही प्राप्त होती है, तो ये जो हिंदू दर्शन है कि इष्ट देव का कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता, उपासना पद्धति का कोई अंतर नहीं होता, आप जिस तरह से चाहें उपासना करें, जिसको चाहे अपना इष्ट देव चुन लें और उसके प्रति अपना निष्ठा से अपनी भक्ति करें तो आपको वो उपलब्ध हो जाएगा जो धर्म के माध्यम से जो कुछ आप प्राप्त करना चाहते हैं तो ये जो अद्वैत का रचना और हम अंत में वहाँ पहुँचते हैं कि हम भी वही हैं जो वो हैं, अहम ब्रह्मासमी। तो अगर मैं भी वही हूँ, आप भी वही हैं, बाकी सारे जीव-जंतु वही है, मतलब हिंदुओं में जिस तरह से सब है कि आज ही हम बात कर रहे थे अपने पोते से, कि हमारे यहाँ जो परम्परा है हिंदू जीवन पद्धति की, कि आप खाना पकाएँगे तो, तो जो पहली रोटी होती है उसमें से आधा गौ के लिए, फिर आधे तो आधा करके कुत्ते के लिए, आप उन जीवन की भी रक्षा करें, पालन-पोषण करें, आप वृक्ष की पूजा करते हैं उनकी महत्व को जानकर उनकी लाभ को देख-कर के ठीक है, तुलसी के प्रति जो भाव है हिंदुओं में कि आपको अशुद्ध हाथों से पानी भी नहीं डालनी चाहिए वृक्षों को, तुलसी के प्रति, पीपल के प्रति, और हम अंततः तो नाग पूजा तक चले जातें हैं, कि सारे जीव जंतु जो है ये उसी का अंश है, तो हम किसी के भी शत्रु नहीं हैं, प्रकृति में जितने अनुकूल होकर के हिंदू जीता है, उतना और कोई नहीं (जिता), हालाँकि आप कह सकते हैं कि आप गंगा तो अपवित्र करते ही हैं, उसमें भी मल डालते हैं तो वो अज्ञान या मजबूरी की बात हो सकती है, लेकिन दर्शन जो हमारा है वो तो उसको स्वीकार नहीं न करता। मतलब ये है कि सबकूछ जो है चाँद-तारे, सूर्य सब उसी के अंश है अगर सूर्य को मैं जल देता हूँ तो उसी ईश्वर को दे रहा हूँ, जो मूर्ति पूजा का सिद्धांत है की आप उसको ईश्वर नहीं मान रहे हैं उसके माध्यम से ईश्वर तक जा रहे हैं, उस रूप में कुछ भी अगर भिन्न नहीं है ब्रह्म से तो कुछ भी पराया नहि है मेरे लिए, सब मैं ही हूँ या मेरा ही है, तो सबके प्रति चर-अचर जीवों के प्रति सबके प्रति प्रेम, स्नेह, लगाव जब काम करते हैं, ये हमारा हिंदू दर्शन है, अब उसके कारण लाभ भी है उसके कारण द्वेष भी है। नुक़सान भी होती है, हानि भी होती है।

प्रश्न 22 : ये तो थी विवेकानंद के अनुसार अध्यात्म दर्शन, आपके अनुसार दर्शन क्या है और यह किसी व्यक्ति के जीवन को किस प्रकार प्रभावित करता है?

उत्तर :

देखो, दर्शन का मतलब तो चिंतन है, सत्य को जानने का मार्ग है,तो अब जीवन में जो हम कहते हैं उसमें दर्शन तो मानते ही मानते हैं, उसके अलावा ज्ञान और बौध भी मानते हैं हम, तो कोई एक मार्ग नहीं है, कोई एक ग्रंथ नहीं है, कोई एक ऋषि नहीं है, सब-कुछ असंख्य रूप में है और ये इसिलिए है, क्योंकि प्रकृति ने विभिन्नता में ये सारी सृष्टि रची है, और हम अपने जो रुचि है स्व रुचि के अनुसार हम अपने लिए मार्ग खोजते हैं, जैसे विवेकानन्द ने कठोर तपस्या की, अपने शिष्यों को उन्होंने कहा कि तपस्या मत करो, उससे शरीर नष्ट होता है, जैसे उनका हुआ, उनके शिष्यों ने कहा कि अच्छा खुद तो तपस्या कर लिया हमको मना कर रहें हैं, पर वो सच्चाई थी क्योंकि तपस्या की भी ज़रूरत नहीं है, एक सहज स्वरूप से आप अपना सारा जीवन, सत्य का जीवन जिएँ, निष्ठा का नियम-पूर्वक तो आपको वो वैसे भी प्राप्त हो सकता है, चमत्कार जाने दीजिए जो कोई आपको ईश्वर चाहिए उसके निकट आप जा सकते हैं।

प्रश्न 23 : जैसे बड़े बड़े लोगों का दर्शन हम सुनते हैं दर्शन है, क्या कोई सामान्य व्यक्ति का भी कोई दर्शन होता है?

उत्तर :

हर व्यक्ति, जिस व्यक्ति से आप बात करेंगे, वो अपना दर्शन ही तो झाड़ रहा होता है कि क्या पहनना चाहिए, क्या खाना चाहिए, विवाह कितने करने चाहिए। अब होने को इस्लाम के नाम पर जो कुछ वो दर्शन दे रहें हैं, वो कोई दर्शन है ? राक्षसी दर्शन है, कि जो तुम्हारी बात न माने उसका गला काट लो, उनका तो वही दर्शन है, अल्लाह ने कहा है, क़ुरान में लिखा है, ठीक है लिखा होगा भाई, लेकिन उसी क़ुरान में लिखा है 1 लाख 40 हज़ार नवी आएँगे, आपने बाकियों को तो भुला दिया, जो वो कह रहे थे कि हत्या मत

करो, आप कहते रहे नहीं हम तो करेंगे, क्योंकि ये हमारे नवी को नहीं मानता, (ये काफिर है।) *तब तो मुसलमानों में भी बहुत काफिर है, शिया भी काफिर हो गया, अहमदिया भी काफिर हो गया, आगाखानी जो हैं वो भी काफिर हो गए। और भी बहुत कुछ हो गया। इसका मतलब ये हुआ कि सिवाय मेरे बाकी सब काफिर हैं। तो सबकी हत्या करना मेरा अधिकार हो गया, ये धर्म है। जो स्त्रियाँ हैं वो सब भोग के लिए हैं, 'माली ग़नीमत' है। तो जिसको चाहो उसको उठा लो और जिसको चाहो उसके साथ बलात्कार करो। उनके ख़लीफ़ा भी यही करते रहे, उनके पेयगंबर भी यही करते रहे। और जिसको चाहो उसको तलाक़ तलाक़ तलाक़ करके भेज दो। तो यही तो इक्स्ट्रीमिज़म (extremism) के रूप में आया। और हमारे लिए तो ये कोई दर्शन नहीं है, हम तो मानते हैं कि ये राक्षसी चिंतन है।*

प्रश्न 24 : जैसा कि मेरा काम जीवनीमूलक उपन्यास पर है, मैं यह जानना चाहता हूँ, जीवनीमूलक उपन्यास की शैली क्या है ? आपके नज़रिए से ?

उत्तर :

वो तो इतिहास की बात है, आप देखेंगे कि हमारा इतिहास कितने प्रकार के हैं। अब जैसे आपने कहा की आपके पौराणिक उपन्यास है, तो पौराणिक उपन्यास की शैली शेयलीयलग है ऐतिहासिक उपन्यास की शैली अलग है, सामान्य समकालीन जीवन की उपन्यास जो है वो अलग है, कुछ काव्यात्मक भी हैं कुछ व्यंग्यात्मक भी हैं, तो तो असंख्य है, हरी अनंत हरी कथा अनंत, लेखक का जो स्वभाव है, जो चरित्र है, जो व्यक्तित्व है, उसके अनुसार वो लिखता है ( ) होते हैं हर समय, आप देख लें। तो उसको सिद्धांत में नहि डाला जा सकता कि हिंदी उपन्यास ऐसा ही होता है। जब मैंने लिखा तब उसमें वर्ग विभाजन करके, ये नहीं कहा था कि ये लिखूँगा, जो लिखा सो लिखा, लिखने के बाद में लोगों ने कहा कि पौराणिक है तो हमने कहा कि ठीक है, पौराणिक है।

प्रश्न 24 : कहा जाता है कि स्वामी विवेकानन्द ने जितनी भी बातें कही है वो सभी बातें युवा जनों के लिए है, तो मैं ये जानना चाहता हूँ कि यह युवा कहने का उनका तात्पर्य क्या है?

उत्तर :

मानवता के लिए जो कुछ उन्होंने लिखा है, केवल युवा ऊवा के लिए नहीं है, केवल युवा के लिए नहीं है कि तुम उइ करो या वृद्धों के लिए नहीं है या बच्चों के लिए नहीं है, वो तो सारी मानवता के लिए है, - यानी कि जिसके भीतर मानवता जीवित होगी वही युवा है।

प्रश्न 25 : आपकी पहली प्रकाशित कृति कौनसी है ? किस विधा में रचित है ?

उत्तर :

मेरी ? हाँ जी - *पहली ? आरम्भ तो होता है कहानीयों से जो पत्रिकाओं में छपती है, उसके बाद फिर हम आते हैं उपन्यासों पर, तो पहली जो मेरी रचना, जिसको मैं पहली प्रकाशित रचना मानता हूँ, वो 1960 में इलाहाबाद की पत्रिका 'कहानी जैसी' श्रीपत राय के सम्पादन में उसमें छपी थी।*

प्रश्न 26 : क्योंकि मैं आपके उपन्यासों पर काम कर रहा हूँ तो, आपका पहला प्रकाशित उपन्यास कौनसा है ?

उत्तर :

'आतंक' है शायद। मुझे इस समय ठीक ठीक याद नहीं है। पहला उपन्यास पुनरारंभ भी हो सकता है, ये भी हो सकता है आतंक।

प्रश्न 27 : स्वामी विवेकानंद का जो अमेरिका में शिकागो में दिया गया व्याख्यान है, आज अगर हम 2020 में बैठ कर के देखें तो वो कितना प्रासंगिक है?

उत्तर :

आपके लिए हिंदू प्रासंगिक है या नहीं है ? हमने कहा है, फिर उन्होंने पूछा हिंदू धर्म प्रासंगिक है या नहीं है, *हमने कहा है, फिर उनका तो है हिंदू धर्म क्या है, हिंदू धर्म का स्वरूप। सारे हिंदू धर्म के सारे सिद्धांतों, सारे ग्रंथों का सार निचोड़ के रख दिया उन्होंने। और तब लोगों को समझ में आया कि हिंदू धर्म यह है। ज़रा सा ध्यान देना कि जो पहला उनका 2.5 मिनट का उनका भाषण था, तालियाँ उसमें बजी थी, लोगों को ये नहीं मालूम की ये उनका परिचय मात्र था, जिसमें कि उन्होंने अपना परिचय दिया था, तालियाँ उसी पे बजी थी, लोगों को यही नहीं मालूम की वो उनका परिचय मात्र था जो 2.5 मिनट का था।*

प्रश्न 28 : आपने काफ़ी सारी विधा लिखा है, जैसे किष्किन्धा नाम से आपका नाटक भी है, व्यंग्य भी है, उपन्यास भी है, कहानी भी है, आप इन विधाओं में किस विधा को अपने निकट की विधा मानते हैं ?

उत्तर :

सबसे सरल, सबसे सुविधाजनक, सबसे स्वाभाविक है उपन्यास। कहानी छोटी होती है, एक घटना होती है एक चरित्र होता है, उससे आपको संतोष नहीं होता, नाटक में सारा निर्माण जो है वो एक मंच की दृष्टि से करना पड़ता है, इसलिए चरित्र की बहुत सारी बातें बाहर नहीं आ सकती जो उसके भीतर है। उपन्यास में ये बहुत सरल है, आप जब चाहें उसमें नाटक करदें, जब चाहें उसमें काव्य कर दो, जब चाहे उसमें कथा कर दो, जब चाहें कटाक्ष कर दो, व्यंग्य कर दो, इसलिए सबको मिलकर के, समग्र रूप से, उपन्यास ही मुझे सरल, सुविधाजनक (लगता है), प्रिय इसलिए नहीं कह रहा हूँ क्योंकि प्रिय तो सभी हैं।

प्रश्न 29 : आप एक लेखक हैं, तो आपकी दृष्टि में प्रतिवद्धता क्या होनी चाहिए?

उत्तर :

सत्य। सत्य के प्रति प्रतिवद्ध होना चाहिए, भयबित नहीं होना चाहिए, लोभ में डूबना नहीं चाहिए या त्रास में डूबना नहीं चाहिए। केवल सत्य पर टिका रहना चाहिए। आपने हिंदी साहित्य में पढ़ा होगा 'संतन को कहा सिकरी सो काम'।

प्रश्न 30 : आपके अनुसार व्यक्तिनिर्माण, राष्ट्र निर्माण और समाज निर्माण क्या है?

उत्तर :

ये तो जो शब्द हैं वही हैं और क्या है ? व्यक्तिनिर्मान व्यक्ति का चरित्र का निर्माण। विवेकानंद जी की सारे संघर्ष में देखोगे, वो वह समय था जब देश में स्वतंत्रता के लिए कितने ही आंदोलन चल रहे थे, लेकिन विवेकानंद स्वतंत्रता के किसी आंदोलन में नहीं गए, कहीं धरना नहीं दिया, कहीं जुलूस नहीं निकाला, कहीं जातन नहीं दिया, कुछ नहीं किया, तो उनसे पूछा गया कि भई ये क्या है आप देश की स्वतंत्रता नहीं चाहते ? तो उनका उत्तर ये था कि, देश आप चाहें तो आज स्वतंत्र हो जाएगा, पर अगर आपका यही चरित्र रहा तो वो स्वतंत्रता टिकेगी नहीं और आप फिरसे परतंत्र हो जाएँगे, इसलिए पहले चरित्रवान बनो, अपने चरित्र का निर्माण करो फिर स्वतंत्रता अपने आप आ जाएगी।

सर एक बात लग रही है अगर हम ब्यक्ति निर्माण को, राष्ट्र निर्माण को या समाज निर्माण को अलग अलग करेंगे...- मुझे रोककर उन्होंने कहा – *क्यों अलग करेंगे भई ब्यक्ति निर्माण से समाज है और उसी से राष्ट्र है व्यक्ति निर्माण हो गया तो समाज निर्माण या राष्ट्र निर्माण हो जाएगा आगे* - मेरे जो sub-chapters हैं उसमें एक है व्यक्ति निर्माण और दूसरा है राष्ट्र निर्माण और समाज निर्माण तो जैसे आपने जो लिखा है बहुत सारे प्रसंग हैं जो राष्ट्र निर्माण में भी आ रहे हैं मैं लिख रहा हूँ वही बात व्यक्ति निर्माण और समाज निर्माण में भी आ रहें हैं – उनका कहना है – *यही तो मैं कह रहा हूँ कि समाज से राष्ट्र भिन्न थोड़ी है, एक वृहद् समाज ही तो राष्ट्र है। जब पंजाबी समाज कहेंगे या बंगाली समाज कहेंगे वो तो*

अलग चीज़ है लेकिन जब आप भारतीय समाज कहेंगे तो सारा भारत समाज कहते हैं तो सारा समाज आगया न, राष्ट्र आ गया उसमें।

प्रश्न 31 : साहित्य के अलावा आपकी रुचि और किन किन विषयों में है?

उत्तर :

देखो साहित्य के साथ दर्शन और इतिहास तो जुड़े हुए हैं, उनके बिना गुज़ारा नहीं है, जब समाज की बात करते हैं तब राजनीति भी आ जाती है, या कम से कम राजनैतिक इतिहास आ जाता है, उस अर्थ में नहीं कि आप राजनीति करें लेकिन देश तो राजनीतिज्ञों के हाथ में चलता है न, ऊपर जो शासक है उसका जो कहिए की दृष्टिकोण होता है और जो कुछ उसके करम होते हैं उसी के, जैसे कि मनमोहन सिंह और नरेंद्र मोदी में जो अंतर है वो आप देख रहे हैं। तो इस रूप में यह है कि ये सारी चीज़ें जो है सभी साहित्य के साथ है, मेरे लिए अलग से कुछ सोचना नहीं पड़ता है। अब जैसे एक उदाहरण बड़ा सही याद आ गया, जब विवेकानंद को अद्वेत का पहला पाठ जो पढ़ाया रामकृष्ण परमहंस ने, उन्होंने उनके हाथ में अष्टावक्र संहिता दे दी, की लो इसको पढ़ो, अब जब मैंने वो पढ़ा अष्टावक्र संहिता खोजी, किताब लाया, उसको पढ़ा, तो उसमें क्या है, उसमें अद्वेत है सारा का सारा, तो दर्शन तो मुझे अपने उस चरित्र के लिए भी चाहिए था, तो मेरी समझ में भी आ गया वो, ईज़ ही हैं बाकी सारी चीज़ें। उस समय ये कहा जा रहा है कि, भारत में हिंदू जो है वो अपनी पत्नी को जला देता है, हिंदू माँ अपने बच्चों को मगरमच्छ को खिला देती है, ये सब आरोप थे उस समय हिंदुओं पर तो फिर आदमी सोचता है कि भई क्यों था ये, क्यों पढ़ाया जा रहा था ये सब-कुछ, अमेरिका में यु एन में, जब खोजते हैं तब इतिहास में आप जाते हैं। ये सब लगी हुई है। एक दूसरे से अनुलग्न है ये सब चीज़ें। आप उनको अलग करके नहीं देख सकते।

प्रश्न 32 : आपके उपन्यास में तोड़ो कारा तोड़ो का जो अर्थ है जैसे भाषा के बंधन को तोड़ना चाहिए, पराधीनता के बंधन को तोड़ना चाहिए, और भी कई सारे चीज़ हैं, तो जैसे आप कह रहें हैं कि ये रवींद्रनाथ के किसी कविता के पंक्ति का अनुवाद है, तो रविंद्र नाथ का जो

अर्थ है, रविंद्र नाथ जो कहना चाह रहे हैं और आपके यहाँ जो अर्थ है उसमें क्या समानता है या क्या भेद है?

उत्तर :

दोनो में भेद है, यहाँ तो वो पंक्ति हमारे काम आ गयी, 'भांग कारा भांग' और वो विवेकानंद के चिंतन के संदर्भ में मैंने ले लिया क्योंकि विवेकानंद जो कह रहे हैं कि ये सारे आत्मा के बंधन भी तोड़ो और मुक्त हो जाओ। शरीर भी बंधन है, उनकी एक कविता है जिसमें कहा गया है कि शरीर में जो है वो एक शृंखला से बधाँ हुआ जहाज़ है, ship है और जिस दिन ये शृंखला तोड़ दो उस दिन वो उन्मुक्त सागर पर वो जाता है तो वैसे ही इस शरीर के इस आत्मा के सारे बंधन तोड़ कर के मुक्त हो जाओ और 'घर चलो' इस तरह से भी उन्होंने एक गीत भी उन्होंने गाया था, तो वो वास्तविक घर जो है वो अध्यात्म की क्षेत्र में वहाँ मोक्ष है। - मोनो चोलो निजो निकेतोने – *हाँ।*

प्रश्न 33 : कोई युवा रचनाकार है, या हम जैसे युवा शोधार्थी हैं, उनके लिए आप क्या संदेश देना चाहेंगे?

उत्तर :

जो कुछ लिखा है संदेश ही संदेश है भाई ! उनसे अलग मुक्त हो करके जो हज़ारों पृष्ट लिखे, उससे अलग कोई संदेश बच के रह गया ? जो मैं अलग से दूँ, सब संदेस ही संदेस हैं, राम कथा हो तो, महासमर हो तो, तोड़ो कारा तोड़ो हो तो, शरणम हो तो, और जो बाकी भी जो सामाजिक उपन्यास है, वे भी, संदेश तो सब उन्ही में से खोजना पड़ेगा न आपको। तो लेखक का संदेश यही है।

ठीक है सर, आपको बहुत बहुत धन्यवाद ! आप इतने वरिष्ठ व्यक्ति हैं और आपने अपने व्यस्ततम समय में से कुछ समय मेरे लिए निकाला। आपको बहुत बहुत धन्यवाद आप स्वस्थ रहें। - उन्होंने कहा – *ख़ुश रहिए, प्रसन्न रहिए, अपना काम कीजिए निष्ठापूर्वक*।

प्रकाशित शोध आलेख

ISSN - 2229-3620
UGC CARE LISTED JOURNAL
शोध संचार बुलेटिन
AN INTERNATIONAL BILINGUAL PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL
January-March, 2021
Vol. 11, Issue 41
Page Nos. 176-179

भारतीय संस्कृति में माँ का स्वरूप

शोध सारांश

शरणम : भय और मोह

- किरीट देबनाथ

ISSN No.: 0970-9398

स्वामी विवेकानंद का ऐतिहा

भूमिका : इस आलेख का प्रयास भारत के महान सन्यासी स्वामी विवेकानंद का आर्य और बौद्धधर्म के प्रति दृष्टिकोण पर प्रकाश डालना है। साथ ही साथ इतिहास को परिभाषित करने का प्रयास भी है।

शोध सार : मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। अतः वह समाज में ही निवास करता है। मनुष्य के जीवन में जिस प्रकार से समाजशास्त्र, भाषाशास्त्र, राजनीतिशास्त्र आदि का महत्व है ठीक उसी प्रकार उसके जीवन में इतिहास का भी महत्व है। चाहे भाषाशास्त्र हो, समाजशास्त्र हो अथवा राजनीतिशास्त्र सबका अपना–अपना इतिहास होता है। अतः यदि इनके इतिहास के बारे में जानकारी नहीं होगी तो हम इन तत्वों को सहजता से समझ नहीं पाएंगे। इस संसार में जितने भी देश हैं, सभी का अपना–अपना इतिहास है। ठीक उसी प्रकार हमारे देश भारत का भी अपना इतिहास है।

इतिहास शब्द का शाब्दिक अर्थ है बीती हुई कहानी। कहा जाता है कि इतिहास वर्तमान का नहीं बल्कि अतीत का होता है। किसी देश के समाज को सुचारू रूप से संचालित करने के लिए उस देश ... के इतिहास के बारे में लोगों ... हिए। इतिहास लोगों को ... एक ऐसा विषय है जिसे ... बांधा जा सकता। पृथ्वी ... आज तक जो कुछ भी ... हास है। कहा जाता

है कि जब अतीत ... क्रमबद्ध किया जा... होता है।

इतिहास के ... द्वारा दी जाने वाली ...

(1) प्रख्यात विद्वान ... अनुसार "इतिहास ... पतन का, मनुष्य ... हुई घटनाओं तथा ... का लेख ... उत्थान ... एवं सा... प्रभावित ...

(2) डब्ल्यू० ... अनुसार ... नहीं है जो आप सोचते हैं। यह वह है जो आप स्मरण रखते हैं"।

(3) एडवर्ड हेलेट कार के अनुसार "इतिहास अतीत और वर्तमान के बीच में एक संवाद है"।

इन विद्वानों की परिभाषाओं का जो मूल सार है वह इस प्रकार है इतिहास एक ऐसा शास्त्र है जिसमें हम विश्व के विभिन्न देशों के उदय और विनाश के कारणों का अध्ययन करते हैं। इस शास्त्र में ऐसी घटनाओं का उल्लेख किया जाता है जिन्हें स्मरण रखा जाता है। ... कहा जाए तो मानव की स्मृति में अतीत ... घटनाएं विद्यमान रहती है वही इतिहास ... पाठक जब इतिहास का अध्ययन करता ... ही वह वर्तमान में रहता है लेकिन ...

...बर, 2021 96 राजभाषा भारती

शोधालेख

भक्ति क्या है?

- किरीट देबनाथ

Bohal Shodh Manjusha
ISSN : 2395-7115
March 2022
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

मीराबाई का योगदान

Kirit Debnath,
Senior Research Scholar, Presidency University

स्वामी विवेकानंद का शिक्षा सम्बंधित दृष्टिकोण

Kirit Debnath
Senior Research Scholar,
Department of Hindi
Presidency University, Kolkata
Contact: 8961573109, 9123330149
email: kirit.presidency@gmail.com

भूमिका:

इस आलेख में शिक्षा के क्षेत्र में स्वामी विवेकानंद के अनुसार राष्ट्र भाषा, अपनी मातृभाषा और अपने धर्म की भाषा का क्या महत्व है? साथ ही साथ शिक्षा क्या है? इतना ही नहीं उनके अनुसार नारी और पुरुषों के बीच में शिक्षा वितरण समान रूप से क्यों होना चाहिए इस पर विचार किया गया है।

शोध सार:

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। इस संसार के किसी भी देश का व्यक्ति चाहे वह भारत का रहने वाला हो, अमेरिका, फ्रांस, जर्मनी, कनाडा, बांग्लादेश, जापान, नेपाल, मारिशस का हो या चाहे किसी भी अन्य देश का हो वह अपने देश में निर्मित समाज में रहता है। उससे अछूता कभी नहीं रह सकता। उसे समाज की रीति-नीतियों को मानकर चलना पड़ता है। विश्व के किसी भी समाज को सुचारू रूप से संचालित करने के लिए शिक्षा की बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका

नरेंद्र कोहली का रचना संसार : सागर मंथन में सांस्कृतिक चिंता

किरीट देबनाथ

नरेंद्र कोहली समकालीन आधुनिक हिंदी साहित्य के एक प्रख्यात रचनाकार है, जिन्होंने पौराणिक विषयों को लेकर हिंदी साहित्य जगत में एक नया आयाम स्थापित किया है। ऐसा प्रतीत होता है कि पौराणिकता का जो दौर समाप्त हो चुका था, उसे उन्होंने दूबारा शुरू कर दिया है। यह तो हम जानते ही हैं कि महाभारत कथा को लेकर आठ खण्डों में उन्होंने 'महासमर' नामक उपन्यास लिखा है, जिसमें महाभारत कथा जीवंत हो चुकी है। और इन उपन्यासों में भले ही हम महाभारत कथा पढ़ने बैठेंगें पर वास्तव में पौराणिक कथा के परिप्रेक्ष्य में अपने जीवन को दूबारा देखकर उठेंगे। इनके उपन्यास के सभी नौ खंड क्रमश: बंधन, अधिकार, कर्म, धर्म, अंतराल, प्रच्छन्न, प्रत्यक्ष, निर्बंध और आनुषंगिक का प्रकाशन लेखक के ७५वें जन्मदिवस के अवसर पर २०१५ में हुआ था।

प्रथम खण्ड में कथा दासराज की कन्या सत्यवती के हस्तिनापुर आगमन से लेकर व्यास द्वारा उन्हें अपने साथ लौटा ले जाने तक की कथा है। ठीक इसी प्रकार दूसरे खण्ड की बात करें तो इसकी कथा हस्तिनापुर में पांडवों के शैशव से आरंभ होकर, वारणावत के अग्निकांड में समाप्त होती है। एक ओर तीसरे खण्ड की कथा युधिष्ठिर के अभिषेक के पश्चात की कथा है, वहीं चौथे खण्ड की कथा खाण्डवप्रस्थ की कथा हैं, जहाँ न कृषि है, न व्यापार है। पूरे क्षेत्र में अराजकता फैली हुई है। अर्जुन का उलूपी,चित्रांगदा तथा सुभद्रा से विवाह का प्रसंग भी इसी खण्ड में है, इतना ही नहीं जरासंध वध का वर्णन भी इसी खंड में है जहाँ तक पाँचवें खण्ड का सवाल है इसकी कथा द्यूत में हारने के बाद पांडवों के वनवास की कथा है। छठे खण्ड की कथा पांडवों के विराटनगर में अज्ञातवास की कथा है। सातवें खण्ड में महाभारत के युद्ध में अर्जुन शिखंडी को सामने रखकर गंगापुत्र भीष्म के वध की कथा है। आठवें खण्ड की कथा द्रौण -पर्व से लेकर शांति-पर्व तक चलती है। यहाँ हमें एक बात ध्यान में रखना चाहिए, वह यह है कि अष्टम खंड में महासमर उपन्यास शृंखला को रचा गया है, किंतु इसका एक और खंड भी है जिसे 'आनुषंगिक' नाम दिया गया है जो 'महासमर' की कथा नहीं है बल्कि उसे सुचारू रूप से समझने हेतु है। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि उसे समझने के सूत्र इस खंड में हमें मिलते हैं। इसी प्रकार रामकथा को लेकर उन्होंने 'युद्ध', भाग-१, 'युद्ध' भाग-२,'अभ्युदय' भाग-१,'अभ्युदय' भाग-२ आदि उपन्यासों की रचना भी की है जिसमें रामकथा को समकालीन आधुनिक परिवेश से जोड़ कर देखने का प्रयास किया गया है। कोहली के इन उपन्यासों को पढ़ने से ऐसा प्रतीत होता है कि कथा तो रामायण की है, परंतु वह हमारे समकालीन जीवन से जुड़ी हुई है। रामकथा पर आधारित इन उपन्यासों का प्रकाशन क्रमश: इस प्रकार हुआ , 'युद्ध' भाग-१ प्रथम संस्करण २००५, आवृत्ति संस्करण २०१२ 'युद्ध' भाग-२ प्रथम संस्करण २००५ और 'आवृत्ति' संस्करण २०१२, 'अभ्युदय' भाग-१, प्रथम संस्करण, २००८ 'अभ्युदय' भाग-२ प्रथम संस्करण २००८ ।

ऐसी बात नहीं है कि महाभारत कथा को लेकर उन्होंने बड़े-बड़े उपन्यास ही लिखे है बल्कि महाभारत की छोटी-छोटी कथाओं को लेकर उन्होंने छोटा-छोटा उपन्यास भी लिखा है, जैसे महाभारत के 'विराट पर्व' पर आधारित 'सैरंध्री' नामक उपन्यास जो द्रौपदी को केंद्र में रखकर गया है। इस उपन्यास में यह बताने का प्रयास किया गया है कि अगर एक महिला को किसी कारण वश अपना मूल परिचय छुपाते हुए किसी